भूमण्डलीकरण एवं डॉ. मनोहर लोहिया का आर्थिक चिंतन की प्रासंगिकता

प्रियम्वदा कुमारी*

सार–संक्षेप

भूमंडलीकरण के प्रारंभिक रूपों में भारत का कपड़ा, इंडोनिशिया और पूर्वी अफ्रीका के मसाले, मलाया का टिन और सोना, जावा का बाटिक और गलीचे, जिंबाबे का सोना तथा चीन के रेशम, पोर्सलीन और चाय ने यूरोप में प्रवेश पाया। यूरोप के लोगों की अपने स्रोतों का ढूढ़ने की उत्सुकता ने यूरोप में अन्वेषण के युग का प्रारंभ किया। अतः पश्चिम के तत्वावधान में आधुनिक भूमंडलीकरण मुख्यतः अतीत में भारतीयों, अरबों और चीनियों द्वारा स्थापित ढाचे के कारण ही संभव हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन की स्थापना इस प्रक्रिया में सहयोग देने वाला एक अन्य कारक है। इससे बढ़कर निजी कंपनियों को अपने देश से बाहर बाजार मिलने और उपभोक्तावाद ने विश्व के विभिन्न भागों को भूमंडलीकरण के विस्तार की ओर प्रेरित किया। डॉ. लोहिया की आर्थिक साधना के अध्ययन के पूर्व यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि समाजवाद का सामाजिक समता से अत्यन्त घनिष्ठ संबंध है। समाजवाद मुख्य रूप से न तो सम्पत्ति का सिद्धान्त है और न राज्य का यह आर्थिक नीतियों से ऊपर एक जीवन–दर्शन है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समता एवं सम्पन्नता का सिद्धान्त है। कोई सच्चा समाजवादी केवल आर्थिक सुधारों से ही सन्तुष्ट नहीं होता, वह अपनी एक विशिष्ट शैक्षणिक, नैतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय नीति का भी प्रतिपादन करता है।

परिचय

आज के भूमंडलीकरण की एक विशेषता 'प्रतिभा पलायन' अथवा प्रतिभा संपन्न लोगों का पूर्व से पश्चिम की ओर भागना है। चौदहवीं सदी का विश्व इसी प्रकार की घटना का साक्षी है परंतु तब बहाव विपरीत अर्थात पश्चिम से पूर्व को था। भूमंडलीकरण के प्रारंभिक रूपों में भारत का कपड़ा, इंडोनिशिया और पूर्वी अफ्रीका के मसाले, मलाया का टिन और सोना, जावा का बाटिक और गलीचे, जिंबाबे का सोना तथा चीन के रेशम, पोर्सलीन और चाय ने यूरोप में प्रवेश पाया।

***पिता– प्रो. योगेन्द्र रावत ''जिज्ञासु'', गैस गोदाम के पूरब, इन्दिरा नगर, समस्तीपुर–848101**

यूरोप के लोगों की अपने स्रोतों का ढूढ़ने की उत्सुकता ने यूरोप में अन्वेषण के युग का प्रारंभ किया। अतः पश्चिम के तत्वावधान में आधुनिक भूमंडलीकरण मुख्यतः अतीत में भारतीयों, अरबों और चीनियों द्वारा स्थापित ढाँचे के कारण ही संभव हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन की स्थापना इस प्रक्रिया में सहयोग देने वाला एक अन्य कारक है। इससे बढ़कर निजी कंपनियों को अपने देश से बाहर बाजार मिलने और उपभोक्तावाद ने विश्व के विभिन्न भागों को भूमंडलीकरण के विस्तार की ओर प्रेरित किया।

भूमंडलीकारण दो क्षेत्रों पर बल देता है – उदारीकरण और निजीकरण। उदारीकरण का अर्थ है औद्योगिक और सेवा क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों से संबंधत नियमों में ढील देना और विदेशी कंपनियों को घरेलू क्षेत्र में व्यापारिक और उत्पादन इकाईयाँ लगाने हेतु प्रोत्साहित करना। निजीकरण के माध्यम से निजी क्षेत्र की कंपनियों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन की अनुमति प्रदान की जाती है, जिनकी पहले अनुमति नहीं थी। इसमें सरकारी क्षेत्र की कंपनियों की संपत्ति को निजी क्षेत्र के हाथों बेचना भी सम्मिलित है। भूमंडलीकरण के आधुनिक रूपों का प्रारंभ दूसरे विश्व युद्ध से हुआ है परंतु इसकी ओर अधिक ध्यान गत 20 वर्षों में गया है। आधुनिक भूमंडलीकरण मुख्यतः विकसित देशों के इर्द – गिर्द केंद्रित है। ये देश विश्व के प्राकृतिक संसाधनों का मुख्य भाग खर्च करते हैं। इन देशों के लोग विश्व जनसंख्या का 20 प्रतिशत हैं परंतु वे पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के 80 प्रतिशत से अधिक भाग का उपभोग करते हैं। उनका नवीनतम प्रौद्योगिकी पर नियंत्रण है। विकासशील देश प्रौद्योगिकी, पूँजी, कौशल और हथियारों के लिए इन देशों पर निर्भर हैं। भूमंडलीकरण कई देशों में सरकार के स्थान पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों को मुख्य भूमिका निभाने की छूट देता है। उनके पास संसाधन एवं प्रौद्योगिकी है और उनकी गतिविधियों को सरकार का सहयोग उपलब्ध है। कई बहुराष्ट्रीय कंपनिया अपनी फैक्ट्रियों को एक देश से दूसरे देश में ले जाती हैं। इस प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी उन्हें उत्पादन और वितरण को भंग कर विश्व में कहीं भी जाने योग्य बनाती है। कल और आज के भूमंडलीकरण में क्या अंतर है ? आज न केवल वस्तुए ही एक देश से दूसरे देशों को जा रही हैं अपितु बड़ी संख्या में लोग भी जा रहे हैं। पहले केवल तैयार की गई वस्तुए ही जाती थीं, अब इनमें कच्चा माल, प्रौद्योगिकी और लोग भी सम्मिलित हैं। पहल पर्व के देशों की ही अंतर्राष्टरीय व्यापार में प्रमुखता थी और उनकी वस्तुओं की मांग, उंचे दाम और सम्मान था। अब स्थिति विपरीत है। अब पश्चिम की वस्तुओं का सम्मान अधिक है। कई कंपनिया विकासशील देशों में वस्तुओं का उत्पादन करके और विकसित

देशों में उन पर अपना लेबल लगा कर पूरे विश्व बाजार में विकसित देशों के उत्पाद के रूप में उन्हें बेच रही हैं।

भूमंडलीकरण के प्रभाव

भूमंडलीकरण प्रत्येक देश को भिन्न–भिन्न ढंग से प्रभावित करता है। इसका प्रभाव एक देश से दूसरे देश में भी बदल जाता है। भूमंडलीकरण का विकसित देशों पर प्रभाव विकाशील देशों से अलग होगा। विकसित देशों में भूमंडलीकरण से नौकरियाँ कम हुई हैं क्योंकि कई कंपनिया उत्पादन खर्च को कम करने के लिए उत्पादन इकाइयों को विकासशील देशों में ले जाती हैं। यूरोप के कई देशों में बेरोजगारी एक सामान्य बात हो गई है। विकासशील देशों में भूमंडलीकरण खाद्यान्नों एवं अन्य कई निर्मित वस्तुओं के उत्पादकों को प्रभावित करता है। भूमंडलीकरण ने कई विकासशील देशों के लिए दूसरे देशों से कुछ मात्रा में वस्तुएँ खरीदना अनिवार्य बना दिया है, भले ही उन वस्तुओं का उनके देश में ही उत्पादन क्यों न हो रहा हो। बाहर के देशों की निर्मित वस्तुओं के प्रवेश से स्थानीय उद्योग को खतरा बढ़ जाता है। विकासशील देशों की दृष्टि से भूमंडलीकरण के कुछ अन्य प्रभाव निम्नलिखित हैं –

आर्थिक प्रभाव : भूमंडलीकरण से अन्य देशों से पूँजी, नवीनतम प्रौद्योगिकी और मशीनों का आगमन होता है। उदाहरण के लिए, भारत का सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग विकसित देशों में प्रयोग किए जाने वाले कंप्यूटरों और दूर संचार यंत्रों का प्रयोग करता है। लगभग 15 वर्ष पहले यह अकल्पनीय था। भारत के कुछ संस्थानों के इंजीनियर स्नातकों की अमरीका और यूरोप के कई देशों में बहुत माँग है। कई देशों में सरकारों के पास प्राकृतिक संसाधनों का स्वामित्व होता है और वे पूरी दक्षता से जन – हित में उनका उपयोग करती हैं और लोगों को विभिन्न सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं। भूमंडलीकरण सरकारों को संसाधनों का निजीकरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे लाभ कमाने की दृष्टि से संसाधनों का शोषण होता है और कुछ लोगों के हाथों में पैसा इकट्ठा हो जाता है। निजीकारण उन लोगों को भी वंचित रखता है जो इन संसाधनों का उपयोग करने के लिए खर्च करने की क्षमता नहीं रखते।

राजनीतिक प्रभाव : भूमंडलीकरण सभी प्रकार की गतिविधियों को नियमित करने की शक्ति सरकार के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को देता है, जो अप्रत्यक्ष रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा नियंत्रित होते हैं। उदाहरण के लिए, जब एक देश किसी अन्य देश की व्यापारिक गतिविधियों के साथ जुड़ा होता है तो उस देश की सरकार उन देशों के साथ अलग – अलग समझौते करती है। यह समझौते अलग–अलग देशों के साथ अलग–अलग होते हैं। अब अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे विश्व व्यापार संगठन सभी देशों के लिए नियमावली बनाता है और सभी सरकारों को

ये नियम – अपने–अपने देश में लागू कराने होते हैं। इसके साथ ही भूमंडलीकरण कई सरकारों को निजी क्षेत्र की सुविधा प्रदान करने हेतु कई विधायी कानूनों और संविधान बदलने के लिए विवश करता है। प्रायः सरकारें कामगारों के अधिकारों की सुरक्षा करने वाले और पर्यावरण संबंधी कुछ नियमों को हटाने पर विवश हो जाती हैं।

सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभाव : भूमंडलीकरण पारिवारिक संरचना को भी बदलता है। अतीत में संयुक्त परिवार का चलन था। अब इसका स्थान एकाकी परिवार ने ले लिया है। हमारी खान–पान की आदते, त्योहार, समारोह भी काफी बदल गए हैं। जन्मदिन, महिला दिवस, मई दिवस समारोह, फास्ट–फूड रेस्तरांओं की बढ़ती संख्या और कई अंतर्राष्ट्रीय त्योहार भूमंडलीकरण के प्रतीक हैं। भूमंडलीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे पहनावे में देखा जा सकता हैं। समुदायों के अपने संस्कार, परंपराए और मूल्य भी परिवर्तित हो रहे।

डॉ. लोहिया का आर्थिक चिंतन

डॉ. लोहिया की आर्थिक साधना के अध्ययन के पूर्व यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि समाजवाद का सामाजिक समता से अत्यन्त घनिष्ठ संबंध है। समाजवाद मुख्य रूप से न तो सम्पत्ति का सिद्धान्त है और न राज्य का यह आर्थिक नीतियों से ऊपर एक जीवन–दर्शन है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समता एवं सम्पन्नता का सिद्धान्त है। कोई सच्चा समाजवादी केवल आर्थिक सुधारों से ही सन्तुष्ट नहीं होता, वह अपनी एक विशिष्ट शैक्षणिक, नैतिक एवं सौन्दर्यशास्त्रीय नीति का भी प्रतिपादन करता है।

डॉ. लोहिया इसी कोटि के समाजवादी थे। उन्होने वर्तमान समाज–व्यवस्था के आर्थिक ही नहीं, अपितु सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक पहलुओं पर भी भीषण प्रहार किया है और प्रत्येक पहलुओं के लिए एक विशिष्ट नीति का प्रतिपादन किया है। उनका कहना था कि, "समाजवाद का अगर एक अंग ले लिया जाता है तो वह, अधूरा रह जाता है। समाजवाद के अंग का मतलब कई हैं। मोटे तरह से मैं कुछ गिना देता हूँ– वामपन्थी राष्ट्रीयता, उग्रपन्थी आर्थिकता, तीसरे उग्रपन्थी धार्मिकता, चौथे उग्रपन्थी सामाजिकता, पांचवें उग्रपन्थी राजनीतिकता।" अन्य समानताओं की अपेक्षा डॉ. लोहिया ने सामाजिक समता का प्रतिपादन अधिाक सशक्त ढंग से किया। सामाजिक विषमताओं में जाति–प्रथा, नर–नारी असमानता, अस्पृश्यता, रंग–भेद नीति और साम्प्रदायिकता आदि ने उनका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।

जाति–प्रथा का उन्मूलन :

भारतवर्ष में जितनी भी सामाजिक विषमताएं हैं उनमें जाति–प्रथा सर्वाधिक विनाशकारी है। जब तक जाति–प्रथा समूल विनष्ट नहीं की जाती, तब तक समाजवाद सम्भव नहीं, क्योंकि आर्थिक और सामाजिक समता समाजवाद के प्रधान लक्ष्य हैं। "आर्थिक गैर बराबरी और जाति–पांति, जुड़वां राक्षस हैं और अगर एक से लड़ना है

तो दूसरे से भी लड़ना जरूरी है।" जाति–प्रथा पिछड़ी और दबी हुई जातियों को आध्यात्मिक समता से वंचित रखती हैं और जितना कि वह उन्हें आध्यात्मिक समता से वंचित रखती हैं, उतना ही वह उन्हें सामाजिक और आर्थिक समता से भी वंचित कर देगी। डॉ. लोहिया की मान्यता थी कि कर्म की प्रतिष्ठा होनी चाहिए, न कि जन्म की। जन्म के आधार पर किसी ब्राह्मण के चरण–स्पर्श का तात्पर्य होता है जाति–प्रथा, गरीबी और दुःख–दर्द को बनाये रखने की प्रत्याभूति। क्योंकि "जिसके हाथ सार्वजतिक रूप से ब्राह्मणों के पैर धो सकते हैं उसके पैर शूद्र और हरिजन को ठोकर भी तो मार सकते हैं।" जहां शूद्र हरिजन तथा अन्य गरीब समूहों को ठोकर मारने की स्थिति हो, वहां समाजवाद की कल्पना निरर्थक है। इस प्रकार समाजवाद स्थापित करने के लिए जितना आवश्यक वर्ग–उन्मूलन है उतना ही जाति–उन्मूलन।

समाजवाद या समतावाद डॉ. लोहिया के जीवन और विचारों में पूर्णरूपेण घुल–मिल गया है। उनका वाक्यांश ''मैं आधा मर्द और आधा नारी हूं।'' नारी के प्रति उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। समाजवाद की स्थापना के लिए वे समाज के अर्द्धांग. अथवा अंग्रेजी भाषा में बेहतर अर्द्धांग को पूर्ण चेतन, सजीव, समर्थ आदि बनाना चाहते थे। वे अर्द्धांग को घर के अंदर छुपाकर रखना, दबाकर रखना, तिजोड़ी में बंद करके रखना। गम्भीर अपराध मानते थे। उनके विचारों में पर्दा–प्रथा नैतिकता, चरित्र और प्रगति के विपरीत है। इस संबंध में उनका सुझाव था कि लड़कियों की स्वयंसेवक टोलियां जगह–जगह नारियों से पर्दा हटाकर इस प्रथा को समाप्त कर सकती हैं।

डॉ. लोहिया नारी को आर्थिक दृष्टि से भी स्वतन्त्र करना चाहते थे। वे नारी को समान कार्य के लिए समान वेतन ही नहीं, अवसर और विधि की समान ही नहीं अपितु नारी की प्राकृतिक कमजोरी की क्षतिपूर्ति के लिए विशेष अवसर के पक्षपाती थे। 'प्रथम योग्यता फिर अवसर' उनका सिद्धान्त न था, बल्कि 'प्रथम अवसर और फिर योग्यता' को ही वे उचित समझते थे। इस हेतु उनका तर्क था कि ''शरीर संगठन के मामले में मर्द के मुकाबले में औरत कमजोर है और मालूम होता है कि कुदरती तौर पर कमजोर है। इसलिए उसे कुछ स्वाभाविक तौर पर ज्यादा स्थान देना ही पड़ेगा।''

महात्मा गाँधी के समान डॉ. लोहिया ने भी आर्थिक और राजनैतिक विकेंद्रीकरण का सशक्त प्रतिपादन किया है। डॉ. लोहिया के राजनैतिक विकेंद्रीकरण–संबंधी विचारों का अध्ययन निम्नलिखित भागों में बांटकर किया जा सकता है: 1. आधुनिक संघात्मक व्यवस्था की अपर्याप्तता, 2. चौखंभा–योजना, 3. प्रशासकीय विकेंद्रीकरण, 4. चौखंभा–योजना का महत्व, 5. चौखंभा–योजना की सफलता के उपाय, 6. चौखंभा–योजना की समीक्षा।

निष्कर्ष

डॉ. लोहिया के चिन्तन में अनेकता के दर्शन होते हैं। त्याग बुद्धि और प्रतिभा के साथ सूर्य की प्रखरता है तो वहीं चन्द्रमा की शीतलता भी। शोषितों के प्रति उनमें फूलों की कोमलता है तो शोषकों के प्रति उनमें वज्र की कठोरता भी है। एक ओर उनका दर्शन ध्वंसात्मक है तो दूसरी ओर रचनात्मक भी। एक ओर यदि वे गृह–व्यवस्था से लेकर विश्व–व्यवस्था तक के प्रति विद्रोह कर उसे ध्वस्त करते हुए प्रतीत होते हैं तो दूसरी ओर प्रत्येक स्तर की व्यवस्था का पुनर्निर्माण करने में भी नहीं चूकते। उनके दर्शन की इस ध्वंसात्मकता और रचनात्मकता की व्याख्या निम्न चश्मोंवाले व्यक्ति भिन्न ढ़ंग से कर सकते हैं। जो व्यक्ति लोहिया की तरह विश्व को सर्वत्र अन्यायों और विषमताओं से भरा पाते है, वे उनकी ध्वंसात्मक प्रवृत्ति को अन्यायों का सतत और सर्वत्र संघर्ष मानकर उसकी प्रशंसा कर सकते हैं और जो व्यक्ति विश्व में उतना अन्याय और अत्याचार नहीं देखते जितना लोहिया, वे लोहिया–दर्शन की ध्वंसात्मकता को अनुपस्थित शत्रु से झगड़ता हुआ मानकर उसकी आलोचना भी कर सकते हैं। लेकिन डॉ. लोहिया के दर्शन का ध्वंसात्मक पहलू उनके सृजनात्मक पहलू का एक अभिन्न अंग है। वे कुरूप, त्रस्त, दलित, भूखे और नंगे वर्तमान को इसलिए ध्वस्त करना चाहते हैं कि उसका स्थान एक सुन्दर, सुखी और सम्पन्न भविष्य ले सके। इस सन्दर्भ में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनके द्वारा प्रतिपादित राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि व्यवस्थाओं के मानचित्र इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। लेकिन उनकी कुछ आदर्श योजनाएँ कुछ लोगों को अव्यावहारिक और असम्भव–सी प्रतीत हो सकती हैं जैसे विश्व–सरकार, संयुक्त राष्ट्र संघ का पुनर्गठन, विश्व–समाजवाद का नवदर्शन, भूमि का पुनर्वितरण, अंतर्राष्ट्रीय जमींदारी–उन्मूलन, अंतर्राष्ट्रीय जाति–प्रथा–उन्मूलन–सम्बन्धी उनकी आदर्श कल्पनाएँ।

संदर्भ स्रोत

1. नारंग, ए.एस. : (2013), ''भारतीय शासन एवं राजनीति'' नई दिल्ली, पेंगुइन, 9
2. बासुकी, नाथ, चौधरी एवं युवराज कुमार : (2011) ''भारतीय शासन एवं राजनीति'', नई दिल्ली, पेंगुइन, 23
3. डॉ. लोहिया : धर्म पर एक दृष्टि, पृ. 4
4. डॉ. लोहिया : आजाद हिन्दुस्तान में नये रूझान, पृ. 11
5. डॉ. लोहिया : मर्यादित, उन्मुक्त और असीमित व्यक्तित्व और रामायण मेला, पृ. 49
6. इन्दुमति केलकर : लोहिया : सिद्धांत और कर्म, पृ. 150